जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जनसंपर्क एवं मीडिया समन्यवक कार्यालय
प्रेस विज्ञप्ति 16 अक्टूबर 2020

आज की दुनिया में चीन अध्ययन के महत्व पर जामिया में अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन सम्मेलन

जामिया मिल्लिया इस्लामिया में एमएमएजे इंटरनेशनल स्टडीज के यूजीसी चाइना स्टडीज़ सेंटर ने "समकालीन दुनिया में चीन के अध्ययन का महत्व" विषय पर दो दिन का अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन सम्मेलन आयोजित किया। दक्षिण अफ्रीका, अफगानिस्तान, ताइवान, बोस्निया, ब्राजील, कोलम्बिया, कोटे डी'वॉइयर और जेएनयू, बीएचयू, दिल्ली विश्वविद्यालय, आईआईटी दिल्ली, गुजरात के केंद्रीय विश्वविद्यालय, दून विश्वविद्यालय, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, शिव नादर यूनिवर्सिटी और आईडीएसए, आईसीडब्ल्यूए, आईसीएस जैसे थिंक टैंक के देश विदेश के 28 विद्वानों ने इस मुद्दे पर सम्मेलन में अपने विचार रखे।

एमएमएजे एआईएस के कार्यकारी निदेशक, प्रो अजय दर्शन बेहेरा ने 13-14 अक्टूबर को आयोजित इस सम्मेलन में हिस्सा लेने वाले देश-विदेश के सभी वक्ताओं का स्वागत किया। उन्होंने वैश्विक व्यवस्था में चीन के महत्व को रेखांकित किया और कोविड-19 माहामारी के बाद के वैश्विक परिदृष्य में और भारत और विश्व के संदर्भ में चीन के अध्ययन पर स्काॅलरशिप शुरू करने की ज़रूरत बताई।

सम्मेलन की संयोजक और चाईनीज़ स्टडीज की प्रोफेसर सुश्री सहेली चट्टराज ने काॅन्फ्रेंस की विषय-वस्तु के महत्व पर विस्तार से बताया कि क्यों शीत युद्ध के बाद के समय में इसका गहराई से अध्ययन किया जाना चाहिए।

मुख्य वक्ता, जेएनयू के प्रो.बी.आर. दीपक ने बताया कि कैसे एक क्षेत्र के रूप में इस बारे में हुए अध्ययनों को साझा अनुभवों तक ही सीमित रखा गया है। खुद के किसी विशिष्ट सिद्धांत को विकसित करने के बजाय कई सामाजिक विज्ञान विषयों से सिद्धांतों को उधार भर ले लिया गया है। उन्होंने कहा कि इस संदर्भ में न सिर्फ अंग्रेजी भाषा, बल्कि भारतीय भाषाओं में भी विभिन्न शैलियों और विषयों से चीनी भाषा के ग्रंथों को समझने की ज़रूरत है जिससे चीन के बारे में अपने ज्ञान के आधार का विस्तार किया जा सके।

सम्मेलन में यह राय उभर कर सामने आई कि अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में एक प्रमुख खिलाड़ी के तौर पर चीन के उदय को स्वीकार करते हुए, उस चीनी राष्ट्रवाद पर खास ध्यान देने की जरूरत जो कि चीनी इतिहास में पहली बार खुद को प्रदर्शित कर रहा है। दुनिया भर के कई वक्ताओं ने अपने विभिन्न क्षेत्रों में चीन के प्रभाव क्षेत्र और इसके

विस्तार के पीछे की वजहों पर चर्चा की। इस बात पर सहमति थी कि आज की दुनिया के साथ चीन के जुड़ाव के बारे में बहुत सी गलत धारणा है। इसलिए, चीन के बारे में एक ऐतिहासिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य रखने की आवश्यकता है। संबंधों को बेहतर बनाने के लिए, भारत और चीन के संबंधों के ऐतिहासिक संदर्भ पर फिर से गौर करने के महत्व पर प्रकाश डाला गया। ताइवान के विद्वानों ने चीन के अध्ययन के लिए ताइवान के सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया।

जेएनयू की प्रोफेसर अलका आचार्य के वेलेडिकटरी लेक्चर के साथ सम्मेलन का समापन हुआ। उन्होंने कहा कि सम्मेलन से यह राय उभर कर सामने आई है कि क्षेत्र के अध्ययनों को पुनर्जीवित करके और सामाजिक विज्ञान, भाषाओं और नीति अध्ययनों के बीच एक संतुलन लाया जाए।

प्रो बेहेरा ने कहा कि आज के उभरते वैश्विक संदर्भ ने भारत के लिए ज़रूरी बना दिया है कि वह चीन अध्ययन और क्षेत्र अध्ययन में अधिक ध्यान दे।

सुश्री चट्टराज ने आयोजन की सफलता के लिए जामिया की कुलपति और विश्वविद्यालय के प्रति आभार व्यक्त किया और इसमें शिरकत करने वाले सभी लोगों का धन्यवाद किया।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया समन्वयक